विद्या - भवन बालिका विद्यापीठ, लखीसराय

वर्ग - द्वितीय विषय - हिंदी

एन.सी.ई.आर.टी पर आधारित

दिनांक - 02 - 08- 2021

पाठ – 5

नेवले ने लाज रखी

सुप्रभात बच्चों ,

आज की कक्षा में आपको नेवले ने लाज रखी के बारे में अध्ययन करना है, जो इस प्रकार है –

- **शब्दार्थ**

(क) अनाथ = बिना मां - बाप का बच्चा

(ख) कुरूप = बदसूरत

(ग) असीम = जिसकी सीमा न हो , बेहद

(घ) रक्षा = बचाव , सुरक्षा

(ङ) करैत = सांपों की एक प्रजाति , जो काला और बहुत जहरीला होता है।

(च) दया = करुणा , रहम

(छ) मूर्ख = मूढ़ , नासमझ

(ज) समीप = निकट

(झ) बावली = पागल

- **शब्दार्थ लिखें तथा याद करें –**

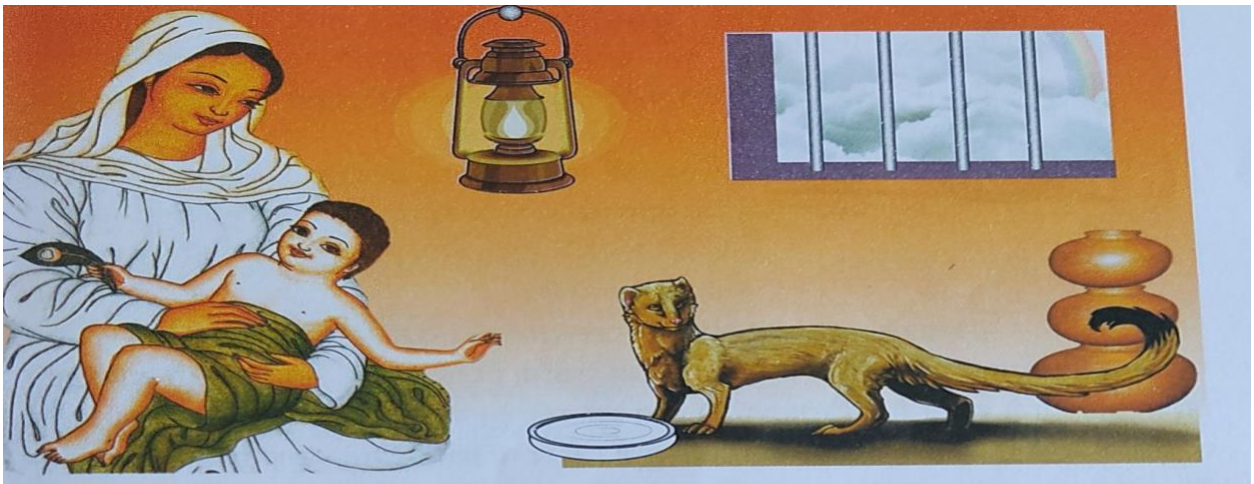

एक भरा पूरा नगर था। यहाँ एक पंडित रहता था। उसका नाम देव शर्मा था। उसकी
नी को बच्चा होने वाला था।

समय आया। उसने एक बच्चे को जन्म दिया। वही घड़ी थी, जब एक नेवली को भी बच्चा
आ। बच्चे को जन्म देते ही नेवली मर गई। नेवली का शिशु अनाथ हो गया। पंडिताइन को दया
गई। वह छोटे नेवले को घर ले आई। अपने बच्चे के साथ–साथ उसे भी दूध पिलाती। उसे

तेल उबटन भी लगाती। इस तरह वह शिशु नेवले की भी माँ बन गई थी।

उसने मन में ममता थी। ममता के साथ–साथ डर भी था। डर का कारण था। कहीं यह नेवला उसके बच्चे को न काट ले। अपने बच्चे से बढ़कर तो संसार में कुछ भी नहीं है। नालायक, कुरूप, मूर्ख, दुष्ट बच्चे को भी देखकर माँ का जी जुड़ा जाता है। लोक प्रचलित नीति के अनुसार अपने बच्चे के शरीर को छूकर माँ को असीम सुख मिलता है। इस सुख के आगे चंदन की शीतलता भी फीकी लगती है।

एक दिन पंडिताइन को घर में पानी की जरूरत पड़ी। उसका बेटा सा रहा था। उसने उसे पालने में लिटाया। पानी तो भरना ही था। घड़ा उठाया। जाते–जाते रुकी। उसने अपने पति से कहा, "मुझे पानी भरना है। मैं तालाब की ओर जा रही हूँ। बच्चे का ध्यान रखना। देखना, नेवला उसे काट न ले।" पति ने उसकी बात नहीं सुनी। इधर पंडिताइन गई, उधर पंडित किसी काम से निकल पड़ा। उनके जाते ही घर सूना हो गया।

घर के समीप ही एक बिल था। उसमें खतरनाक करैत साँप रहता था। अब वह करैत बाहर निकला।

शिशु गहरी नींद में था। वह साँप को भला कैसे देखता?

माता–पिता घर में नहीं थे। शिशु की रक्षा का भार केवल छोटे नेवले पर आ पड़ा।

नेवले के सामने साँप था। साँप उसका जनम–जनम का बैरी। नेवले के लिए

अपने भाई के जीवन–मरण का सवाल था। नेवला जोश में आ गया। वह सब कुछ भूल गया। उसने साहस और ताकत को बटोरा। वह करैत पर टूट पड़ा। नेवले ने साँप के टुकड़े–टुकड़े कर दिए।

नेवले की विजय हुई। साँप के खून से उसका मुँह लाल हो गया। मानो उसकी जीत की कहानी उसके मुँह पर लिखी थी। नेवला बहुत खुश हुआ। उसमें धीरज न रहा। वह दौड़ता हुआ पंडिताइन के पास पहुँचा। उसने अपने भाई की जान बचाई थी। पंडिताइन के दूध की लाज रखी थी। नेवला अपनी बहादुरी और विजय की कथा सुनाना चाहता था।

पंडिताइन ने नेवले का मुँह देखा। उस पर खून लगा था। वह घबरा गई। बावली ने सोचा, ''इसने मेरे बच्चे को काट खाया। उसी का खून लगा हुआ है।''

अब क्या था? उसने आव देखा न ताव। घड़ा उठाया। नेवले पर दे मारा। बेचारा नेवला वहीं खतम हो गया।

रोती कलपती पंडिताइन घर भागी। घर में पालने पर उसका बेटा सुख से सो रहा था। पास ही मरे साँप के टुकड़े पड़े थे।

पंडिताइन अपनी गलती समझ गई। उसके शोक का ठिकाना न रहा। छाती पीट–पीट कर रोने लगी, ''मैंने अपने नेवले बेटे को खुद ही मार डाला। उसने तो मेरे बेटे की जान बचाई थी और मैंने उसे ही मार डाला। हाय मेरा नेवला, हाय मेरा बच्चा।''

बिना सोचे समझे काम करने वाले इस पंडिताइन की तरह पछताते हैं। वे अपने पैरों पर खुद ही कुल्हाड़ी मार लेते हैं।

शिक्षण संकेत

कक्षा में कहानी का वाचन करें। बच्चों को साँप और नेवले के बारे में प्राचीन समय से चली आ रही उक्ति को समझाएँ। पंडिताइन की ममता और डर तथा शिशु नेवले की स्वामिभक्ति को अच्छी तरह समझाएँ। इसके अतिरिक्त बच्चों को यह भी बताएँ कि बिना सोच–समझ कर किए गए काम पर सदा ही पश्चाताप करना होता है। इस कहानी के माध्यम से बच्चों में यह भावना जगाएँ कि वह प्रत्येक काम को सोच–समझ कर ही करें।

गृहकार्य

दिए, गए अध्ययन सामग्री को पूरे मनोयोग से पढ़ें तथा समझने का प्रयास करेंगे -

****

ज्योति